3001

B.A. (Part-III) Examination, 2022

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न-पत्र

(आधुनिक काव्य)

Duration of Examination: 90 Minutes Max. Marks: 50

परीक्षा की अवधि: 90 मिनट पूर्णांक: 50

Instructions to the Candidates:

परीक्षार्थी के लिए निर्देश:-

परीक्षार्थीगण सम्पूर्ण प्रश्नपत्रों में से 50 प्रतिशत अंक के प्रश्नों के उत्तर देवें। परीक्षार्थी द्वारा किन्हीं कारणों से 50 प्रतिशत अंकों से ज्यादा उत्तर देने की स्थिति में परीक्षक द्वारा उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन 50 प्रतिशत अंकों से ही किया जायेगा।

1- निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) एक तुम, यह विस्तृत भू खण्ड प्रकृति वैभव से भरा अमंद,
कर्म का भोग, भोग का कर्म, यही जड़ का चेतन आनंद।
अकेले तुम कैसे असहाय यजन कर सकते ? तुच्छ विचार,
तपस्वी । आकर्षण से हीन कर सके नहीं आत्म-विस्तार।
दबे रहे हो अपने ही बोझ खोजते भी न कहीं अवलम्ब,
तुम्हारा सहचर बनकर क्या न उऋण होऊँ मैं बिना विलम्ब ?
समर्पण लो-सेवा का सार सजल संसृति का यह पतवार,
आज से यह जीवन उत्सर्ग इसी पद तल में विगत विकार।

अथवा

प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत,
सिंधु से आकाश तक सबको किये भयभीत,
सृष्टि को निज बुद्धि से करता हुआ परिमेय,
चीरता परमाणु की सत्ता असीम, अजेय,
बुद्धि के पवमान में उड़ता हुआ असहाय
जा रहा तू किस दिशा की ओर को निरूपाय ?
लक्ष्य क्या ? उद्देश्य क्या ? क्या अर्थ ?
यह नहीं यदि ज्ञात, तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ ।

(ख) अस्ताचल ढले रवि, शशि छवि विभावरी में,
चित्रित हुई है देख, यामिनीगंधा जगी,
एकटक चकोर कोर दर्शन-प्रिय, आशाओं-भरी मौन भाषा बहु भावमयी
घेर रहा चन्द्र को चाव से, शिशिर भार-व्याकुल कुल
खुले फूल झुके हुए, आया कलियों में मधुर
मद-उर यौवन-उभार, जागो फिर एक बार।

अथवा

उस शैल-शिखर पर, खड़ा हुआ दीखता है एक द्यौः पिता भव्य निः संग
ध्यान-मग्न ब्रह्म..., मैं ही वह विराट पुरूष हूँ,
सर्व-तन्त्र, स्वतंत्र, सत् चित् ।
मेरे इन अनाकार कन्धों पर विराजमान, खड़ा है सुनील
शून्य, रवि-चन्द्र-तारा-द्युति-मण्डलों के परे तक।

(ग) तुम नृशंस नृप से जगती पर चढ़ अनियंत्रित,
करते हो संसृति को उत्पीड़ित, पद मर्दित,
नग्न नगर कर, भग्न भवन, प्रतिमाएँ खंडित,

https://universitynews.in

हर लेते हो विभव, कला, कौशल चिर-संचित !

आधि, व्याधि, बहुवृष्टि, वात, उत्पात, अमंगल

वहि, बाढ़, भूकम्प- तुम्हारे विपुल सैन्य दल,

अहे निरंकुश ! पदाघात से जिनके विह्वल

हिल-हिल उठता है टल मल

पद दलित धरातल !

अथवा

धीरे धीरे, धुंधले में चेहरे की रेखाएं, मिट जायें-

केवल नेत्र जगें, उतनी ही धीरे

हरी घास की पत्ती-पत्ती भी मिट जावे,

लिपट झाड़ियों के पैरों में, और झाड़ियाँ भी धुल जायें।

और झाड़ियाँ भी धुल जायें।

क्षित रेखा के मसृण ध्वान्त में,

केवल बना रहे विस्तार हमारा बोध मुक्ति का,

सीमाहीन खुलेपन का ही।

2. 'साकेत' महाकाव्य के कथानक में युगानुरूप अभिव्यक्ति को स्पष्ट करते हुये उर्मिला की चारित्रिक विशेषताएं बताइये।

शब्द सीमा : 400 शब्द

अथवा

रामधारी सिंह 'दिनकर' की काव्यगत प्रवृत्तियों पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिये।

3. "मुक्तिबोधक की कविता का सत्य, जीवन के यथार्थ का सत्य है।" इस कथन को 'भूल गलती' कविता से स्पष्ट कीजिए।

शब्द सीमा: 500 शब्द

https://universitynews.in

अथवा

"महादेवी के काव्य में प्रकृति ही उनकी भाव राशि की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी है। "संकलित कविताओं के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4. नरेश मेहता की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। शब्द सीमा 500 शब्द

अथवा

'कनुप्रिया' के भाव सौन्दर्य की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

5. आधुनिक कविता के उद्भव व विकास की यात्रा पर लेख लिखिए। शब्द सीमा 500 शब्द

अथवा

छायावादी कविता की विशेषताओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

6. रस निष्पत्ति के संबंध में प्रचलित चारों वादों का उल्लेख कीजिए। शब्द सीमा 500 शब्द

अथवा

श्रृंगार, हास्य, वीर तथा शांत रसों को उनके अवयवों के साथ उदाहरण सहित समझाइये।

https://universitynews.in